SAYYIDI QUTBE MADINA (HINDI)

सय्यिदी क़ुत्बे मदीना

(सीरते हज़रते ज़ियाउद्दीन अहमद म-दनी क़ादिरी र-ज़वी رحمۃ اللہ علیہ के चन्द गोशे)

www.dawateislami.net

जन्नतुल बक़ीअ़

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

مکتبۃ المدینہ
(دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : *ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले* (المُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

www.dawateislami.net

सय्यिदी कुत़्बे मदीना

येह रिसाला (**सय्यिदी कुत़्बे मदीना**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा,
अह़मद आबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 079-25391168
MO. 9377111292, (FOR SMS ONLY)
e-mail : maktabahind@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सय्यिदी कुत़्बे मदीना

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए मगर आप येह रिसाला (20 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ कर एक वलिय्ये कामिल की ब-र-कतों से अपना ईमान ताज़ा कीजिये।

100 ह़ाजतें पूरी होंगी

सुल्त़ाने दो जहान, मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो मुझ पर जुमुआ़ के दिन और रात **100** मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की **100 ह़ाजतें** पूरी फ़रमाएगा, **70** आख़िरत की और **30** दुन्या की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो उस **दुरूदे पाक** को मेरी क़ब्र में यूं पहुंचाएगा जैसे तुम्हें तह़ाइफ़ पेश किये जाते हैं, बिला शुबा मेरा इ़ल्म मेरे विसाल के बा'द वैसा ही होगा जैसा मेरी ह़यात में है। (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج۷ ص۱۹۹ حدیث۲۲۳۵۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ (राक़िमुल ह़ुरूफ़) बचपन ही से **इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, इमामे इ़श्क़ो मह़ब्बत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से मु-तआ़रिफ़ हो चुका था, फिर जूं जूं शुऊ़र आता गया,

www.dawateislami.net

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की **मह़ब्बत** दिल में घर करती चली गई थी । मैं बिला ख़ौफ़े **लौ-मति लाइम** (या'नी मलामत करने वाले की मलामत से डरे बिग़ैर) कहता हूं कि **रब्बुल उ़ला** عَزَّوَجَلَّ की पहचान **मीठे मीठे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए़ हुई तो मुझे **मीठे मीठे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पहचान **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सबब नसीब हुई । मुझे आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सिल्सिले में दाख़िल होने का शौक़ पैदा हुवा तो एक ही हस्ती मर्कज़े तवज्जोह बनी, गो मशाइख़े अहले सुन्नत की कमी थी न है, मगर "पसन्द अपनी अपनी ख़याल अपना अपना ।" इस मुक़द्दस हस्ती का दामन थाम कर एक ही वासित़े से आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से निस्बत हो जानी थी और उस हस्ती में एक कशिश येह भी थी कि उस पर बराहे रास्त गुम्बदे ख़ज़रा का साया पड़ रहा था । **उस** मुक़द्दस हस्ती से मेरी मुराद **ह़ज़रत शैख़ुल फ़ज़ीलत, आफ़्ताबे र-ज़विय्यत, ज़ियाउल मिल्लत, मुक़्तदाए अहले सुन्नत, मुरीद व ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, पीरे त़रीक़त, रहबरे शरीअ़त, शैख़ुल अ़-रबि वल अ़जम, मेज़बाने मेहमानाने मदीना, क़ुत़्बे मदीना, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद म-दनी क़ादिरी र-ज़वी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की ज़ाते गिरामी है । मैं ने अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया कि अब किसी न किसी त़रह़ मुझे इन का मुरीद बनना है, चुनान्चे मैं ने ग़ालिबन 1396 हि. (या'नी 1976 ई.) में आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا का पता ह़ासिल किया । पता ह़ासिल करने के बा'द अपने एक करम फ़रमा मर्ह़ूम मुह़म्मद

www.dawateislami.net

आदम बरकाती साहि़ब को बताया कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदी **कुत़्बे मदीना** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से ब ज़रीअ़ए डाक बैअ़त करने का तहिय्या किया है। मर्हूम आदम भाई ने कहा : तुम कराची में रहते हो और वोह **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में। तुम ने अभी तक उन्हें देखा तक नहीं है आख़िर **तसव्वुरे शैख़** किस त़रह़ करोगे ? मैं ने कहा : इस में कौन सी बड़ी बात है अगर पीर कामिल हो तो ख़्वाब के ज़रीए़ भी येह मस्अला ह़ल कर सकता है ज़ाहिरी दूरी फ़ुयूज़ो ब-रकात में रुकावट नहीं बन सकती।

उसी रात (या'नी रबीउ़न्नूर शरीफ़ की दसवीं शब) जब सोया तो सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी और اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَل सचमुच मेरे होने वाले पीरो मुर्शिद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए और इतनी देर तक जल्वा अफ़रोज़ रहे कि उन का नक़्शा मेरे ज़ेहन में अच्छी त़रह़ मह़फ़ूज़ हो गया और اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَل आज भी मह़फ़ूज़ है। मैं ने ख़ुशी ख़ुशी ह़ज़रते सय्यिदी **कुत़्बे मदीना** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ख़लीफ़ए मजाज़ पीरे त़रीक़त ह़ज़रत अलह़ाज अ़ल्लामा मौलाना ह़ाफ़िज़ क़ारी मुह़म्मद मुस्लिहुद्दीन सिद्दीक़ी अल क़ादिरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अपना ख़्वाब सुनाया। उन्हों ने मुझ से ह़ज़रते सय्यिदी **कुत़्बे मदीना** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का हुलिया दरयाफ़्त किया, मैं ने जो देखा था बयान कर दिया। उन्हों ने इस की तस्दीक़ फ़रमाई क्यूं कि क़िब्ला क़ारी साहि़ब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बारहा **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में ह़ज़रते सय्यिदी **कुत़्बे मदीना** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िरी दे चुके थे। फिर क़ारी साहि़ब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ही से ब सिल्सिलए बैअ़त अ़रीज़ा

www.dawateislami.net

लिखवा कर कराची से **मदीनए त़य्यिबा** زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیماً रवाना किया। जवाब न मिला। चन्द बार इसी त़रह़ अ़रीज़े भेजे मगर जवाब नदारद। मैं भी हिम्मत हारने वाला नहीं था। आख़िरे कार एक साल और पांच रोज़ गुज़रने के बा'द फिर क़िस्मत चमकी, रात ख़्वाब में ज़ियारत हुई। मैं ह़ैरान था कि मुरीद भी नहीं बनाते, तवज्जोह भी नहीं हटाते आख़िर मुआ़-मला क्या है ? मुझे क्या मा'लूम था कि इन्तिज़ार की घड़ियां **ख़त्म** हो चुकी हैं। रात को ज़ियारत की फिर दिन आया और मग़रिब की नमाज़ के बा'द पता चला कि मदीनए पाक زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की मुश्कबार फ़ज़ाओं को चूमता हुवा झूमता हुवा मुर्शिदी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाहे इ़त्र बेज़ व अ़म्बर ख़ैज़ से क़बूलिय्यत का मुज़्दए जां फ़िज़ा आ पहुंचा है। اَلحمدُللّٰہِ علٰی اِحسانِہٖ। फिर जब सि. 1400 हि. में मुक़द्दर ने या-वरी की, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने करम फ़रमाया तो जद्दा शरीफ़ के एरपोर्ट पर उतर कर मोह़सिन व करम फ़रमा और अपने पीर भाई साकिने मदीना अलह़ाज सूफ़ी मुह़म्मद इक़्बाल क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई سَلَّمَہُ البارِی की कार में बैठ कर सीधा **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا ह़ाज़िर हुवा। बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में सलातो सलाम अ़र्ज़ करने के बा'द मुर्शिदी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के आस्तानए आ़लिया पर ह़ाज़िर हुवा, जब बेताब निगाहें मुर्शिदी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के चेह्‌रए ज़ैबा पर पड़ीं तो दिल को गवाही देनी पड़ी कि येह तो वोही नूरानी चेहरा है जिसे बाबुल मदीना कराची में ख़्वाब में देख चुका हूं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है। (जामेअ़ सगीर)

तसव्वुर जमाऊं तो मौजूद पाऊं

करूं बन्द आंखें तो जल्वा नुमा हैं

اَلحَمدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ कमो बेश दो माह **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल रही इस दौरान तक़्रीबन रोज़ाना आस्तानए आ़लिया पर होने वाली मह़फ़िले ना'त में ह़ाज़िरी देता रहा। बारहा शाम को भी आस्तानए मुर्शिदी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ पर ह़ाज़िरी नसीब होती रही। जब **मदीनए त़य्यिबा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا से रुख़्सत की जां सोज़ घड़ी आई तो सर पर कोहे ग़म टूट पड़ा, बारगाहे रिसालत में सलामे रुख़्सत अ़र्ज़ करने के लिये चला तो अ़जीब ह़ालत थी, मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की गली के दरो दीवार और बर्गो बार चूमता हुवा बढ़ा चला जा रहा था। इसी दौरान मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की गली के एक ख़ार (या'नी कांटे) ने आंख के पपोटे पर प्यार से चुटकी भर ली जिस से हलका सा ख़ून उभर आया।

www.dawateislami.net

येह ज़ख़्म है त़यबा का येह सब को नहीं मिलता

कोशिश न करे कोई इस ज़ख़्म को सीने की (वसाइले बख़्शिश, स. 306)

बहर ह़ाल मुवा-जहा शरीफ़ पर ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ कर के रोता हुवा **मस्जिदुन्न-बविय्यिशशरीफ़** علٰی صاحِبِھا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام से बाहर निकला और गिरता पड़ता मुर्शिद के आस्तानए आ़लिया पर ह़ाज़िर हुवा और मुज़्त़रिबाना सर मुर्शिद के ज़ानू पर रख दिया और रोते रोते हिचकियां बंध गईं। मुर्शिदी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने इन्तिहाई **मह़ब्बत** के साथ सर पर दस्ते शफ़्क़त फैर कर बिठाया और इर्शाद फ़रमाया : "बेटा तुम **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا से जा नहीं, आ रहे हो।" उस वक़्त

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़)

मुझे अपने वलिय्ये कामिल पीरो मुर्शिद رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ के इस जुम्ले के मा'ना समझ में नहीं आए क्यूं कि ब ज़ाहिर मैं जा रहा था और मुर्शिद फ़रमा रहे थे : "तुम जा नहीं, आ रहे हो ।" लेकिन अब अच्छी त़रह़ इस जुम्ले के सर बस्ता राज़ को समझ चुका हूं क्यूं कि येह मुर्शिद की करामत थी और मेरा हुस्ने ज़न है कि मुर्शिद मेरा मुस्तक़्बिल देख चुके थे और اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल मुर्शिद के सदक़े **मदीनए पाक** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की इतनी बार ह़ाज़िरी नसीब हुई है कि मुझे याद भी नहीं कि मैं ने कितनी बार **सफ़रे मदीना** किया है ! येह सब करम की बात है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करे मुर्शिद के सदक़े इसी त़रह़ **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में आना जाना रहे और आख़िरे कार **जन्नतुल बक़ीअ़** में मुर्शिद के क़दमों में मदफ़न नसीब हो जाए ।

रहे हर साल मेरा आना जाना या रसूलल्लाह
बक़ीए़ पाक हो आख़िर ठिकाना या रसूलल्लाह (वसाइले बख़्शिश, स. 100)

इमामे अहले सुन्नत ने दस्तार बन्दी फ़रमाई

सय्यिदी **क़ुत़्बे मदीना** رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ की विलादते बा सआ़दत 1294 हि., 1877 ई. में पाकिस्तान के ज़िलअ़ ज़ियाकोट (दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में "सियाल कोट" को "ज़ियाउद्दीन" की निस्बत से "ज़ियाकोट" कहते हैं) में ब मक़ाम "कलास वाला" हुई । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की औलाद में से हैं । इब्तिदाई ता'लीम ज़ियाकोट (सियाल कोट) में ह़ासिल की । फिर मर्कज़ुल औलिया लाहोर शरीफ़ और 22 ख़्वाजा की चौखट देहली शरीफ़ में कुछ

अ़र्सा तह़सीले इ़ल्म किया, बिल आख़िर पीलीभीत, (यूपी, अल हिन्द) में ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना वसी अह़मद मुह़द्दिसे सूरती عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की ख़िदमत में तक़रीबन चार 4 साल रह कर उ़लूमे दीनिया ह़ासिल किये और **दौरए ह़दीस** के बा'द स-नदे फ़राग़त ह़ासिल की। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के दस्ते करामत से सय्यिदी **क़ुत़्बे मदीना** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की दस्तार बन्दी हुई। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से **बैअ़त** भी की और सिर्फ़ 18 साल की उ़म्र में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से स-नदे ख़िलाफ़त भी पाई।

कली हैं गुलिस्ताने ग़ौसुल वरा की
येह बाग़े रज़ा के गुले ख़ुशनुमा हैं (वसाइले बख़्शिश, स. 306)

www.dawateislami.net

बाबुल मदीना ता बग़दाद

सय्यिदी **क़ुत़्बे मदीना** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه तक़रीबन 24 साल की उ़म्र में अपने पीरो मुर्शिद इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रुख़्सत हो कर 1318 हि., (1900 ई.) में बाबुल मदीना कराची तशरीफ़ लाए। कुछ अ़र्सा यहीं गुज़ार कर **ह़ुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَکْرَم से ख़ुसूसी फ़ुयूज़ो ब-रकात ह़ासिल करने के लिये **बग़दादे मुअ़ल्ला** ह़ाज़िर हुए। वहां तक़रीबन चार 4 बरस इस्तिग़राक़ की कैफ़िय्यत रही और मजज़ूब रहे। अ़रूसुल बिलाद बग़दाद में 9 बरस और कुछ माह क़ियाम रहा।

मदीनए पाक में ह़ाज़िरी

1327 हि., 1910 ई. में सय्यिदी **क़ुत़्बे मदीना** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बग़दादे पाक से ब रास्ता दिमश्क़ (शाम) ब ज़रीअ़ए रेलगाड़ी **मदीनए**

त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا ह़ाज़िर हुए। उन दिनों वहां तुर्कों की ''ख़िदमत'' थी।

गुम्बदे ख़ज़रा पे आक़ा जां मेरी क़ुरबान हो
मेरी देरीना येही ह़सरत शहे अबरार है (वसाइले बख़्शिश, स. 122)

सात दिन का फ़ाक़ा

ह़ज़रते सय्यिदी **क़ुत्बे मदीना** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब मैं **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا ह़ाज़िर हुवा तो शुरूअ़ के दिनों में ऐसा वक़्त भी आया कि मुझ पर सात 7 दिन का फ़ाक़ा गुज़रा। सातवें रोज़ जब मैं भूक से निढाल हो गया तो मेरे पास एक पुर हैबत बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए और उन्हों ने मुझे तीन 3 मश्कीज़े दिये। एक में शहद, दूसरे में आटा और तीसरे में घी था। मश्कीज़े दे कर येह कहते हुए तशरीफ़ ले गए कि मैं अभी बाज़ार से मज़ीद अश्या लाता हूं। थोड़ी देर बा'द चाय का डिब्बा और चीनी वग़ैरा ला कर मुझे दिये और फ़ौरन वापस चले गए। मैं पीछे लपका कि उन से तफ़्सीलात मा'लूम करूं मगर वोह ग़ाइब हो चुके थे। **क़ुत्बे मदीना** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया गया : आप के ख़याल में वोह कौन थे ? उन्हों ने फ़रमाया : मेरे गुमान में वोह मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चचाजान सय्यिदुश्शु-हदा सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ थे क्यूं कि **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की विलायत इन्ही के सिपुर्द है।

वोह इ़श्क़े ह़क़ीक़ी की लज़्ज़त नहीं पा सकता
जो रन्जो मुसीबत से दो चार नहीं होता (वसाइले बख़्शिश, स. 132)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदी **कुत्बे मदीना** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से वालिहाना अ़क़ीदत रखते थे और हर साल 17 **र-मज़ानुल मुबारक** को सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का उ़र्स शरीफ़ मनाते और एक रोज़ा सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मज़ारे पुर अन्वार पर इफ़्तार फ़रमाते थे।

मरह़बा, मरह़बा

हुज़ूर सय्यिदी **कुत्बे मदीना** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पैकरे इ़ल्मो अ़मल थे, अपने घर से निकलने और बग़दादे मुअ़ल्ला के क़ियाम और **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में इक़ामत के दौरान जिस क़दर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर इम्तिह़ानात पेश आए उन पर सब्रो तह़म्मुल आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ही का ह़िस्सा था। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه निहायत ही ख़लीक़ (या'नी बा अख़्लाक़) और मिलन सार थे, अक्सर जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में कोई ह़ाज़िर होता तो **मरह़बा ! मरह़बा !** की सदा बुलन्द फ़रमाते। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ (राक़िमुल हुरूफ़) भी जब ह़ाज़िरे ख़िदमत होता तो कई बार आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपनी शीरीं **सु-ख़नी** के साथ "मरह़बा भाई इल्यास ! मरह़बा भाई इल्यास !" फ़रमा कर दिल को बाग़ बाग़ बल्कि बाग़े मदीना बनाया है। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه निहायत ही मु-तवाज़ेअ़ और **मुन्कसिरुल मिज़ाज** थे। सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ ने बारहा देखा है कि जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में दुआ़ की दर-ख़्वास्त पेश की जाती तो इर्शाद फ़रमाते : "मैं तो दुआ़ गो भी हूं और दुआ़ जो भी।" या'नी दुआ़ करता भी हूं और आप से दुआ़ का त़लबगार भी हूं।

ज़िया पीरो मुर्शिद मेरे रहनुमा हैं

सुरूरे दिलो जां मेरे दिलरुबा हैं (वसाइले बख़्शिश, स. 306)

रोज़ाना मह़फ़िले मीलाद

ह़ज़रते सय्यिदी **कुत़्बे मदीना** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ताजदारे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से जुनून की ह़द तक इ़श्क़ था बल्कि येह कहना बे जा न होगा कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़नाफ़िर्रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के आ'ला मन्सब पर फ़ाइज़ थे। ज़िक्रे रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही आप का रोज़ो शबाना मश्ग़ला था। अक्सर ज़ियारत के लिये आने वाले से इस्तिफ़्सार फ़रमाते : आप ना'त शरीफ़ पढ़ते हैं ? अगर वोह हां कहता तो उस से ना'त शरीफ़ समाअ़त फ़रमाते और ख़ूब मह़ज़ूज़ होते। बारहा जज़्बाते **तअस्सुर** से आंखों से सैले अश्क रवां हो जाता। सारा ही साल रोज़ाना रात को आस्तानए आ़लिया पर **मह़फ़िले मीलाद** का इन्इ़क़ाद होता, जिस में म-दनी, तुर्की, पाकिस्तानी, हिन्दूस्तानी, शामी, मिस्री, अफ़्रीक़ी, सुडानी और दुन्या भर से आए हुए ज़ाइरीन शिर्कत करते। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को भी कई बार उस मुक़द्दस मह़फ़िल में ना'त शरीफ़ पढ़ने का शरफ़ ह़ासिल हुवा है। सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ ने एक ख़ास बात सय्यिदी **कुत़्बे मदीना** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मह़फ़िल में येह देखी कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इख़्तिताम पर बत़ौरे तवाज़ोअ़ दुआ़ नहीं फ़रमाते थे बल्कि किसी न किसी शरीके मह़फ़िल को दुआ़ का हुक्म फ़रमा देते। दो एक बार मुझ पापी व कमीना सगे **कुत़्बे मदीना** को भी اَلْاَمْرُ فَوْقَ الْاَدَب या'नी "हुक्म अदब पर फ़ौक़िय्यत रखता है" के तह़्त आस्तानए आ़लिया

www.dawateislami.net

पर इख़्तिताामे महफ़िले मीलाद पर दुआ़ करवाने की सआ़दत ह़ासिल हुई है । दुआ़ के बा'द रोज़ाना लाज़िमी लंगर शरीफ़ भी होता था ।

रातें भी मदीने की बातें भी मदीने की
जीने में येह जीना है क्या बात है जीने की

तम्अ़ नहीं, मन्अ़ नहीं और जम्अ़ नहीं

ह़ज़रते सय्यिदी **कुत़्बे मदीना** رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ एक **करीमुन्नफ़्स** और **शरीफ़ुल फ़ित़रत** बुज़ुर्ग थे उन की कुर्बत में उन्स व **महब्बत** के दरिया बहते थे और **स-लफ़े सालिह़ीन** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की याद ताज़ा हो जाती, आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ सख़ी और बहुत अ़त़ा फ़रमाने वाले थे । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाया करते थे : "तम्अ़ नहीं, मन्अ़ नहीं और जम्अ़ नहीं ।" या'नी "लालच मत करो कि कोई दे और अगर कोई बिग़ैर मांगे दे तो मन्अ़ मत करो और जब ले लो तो जम्अ़ मत करो ।" जब आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ को कोई इ़त्र पेश करता तो ख़ुश हो कर उसे इस त़रह़ दुआ़ देते : "عَطَّرَ اللّٰهُ اَيَّامَكُم" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे अय्याम मुअ़त्त़र (ख़ुश्बूदार) करे । आप को शहन्शाहे उमम, सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم से बेह़द उल्फ़त थी, एक बार फ़रमाने लगे : किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

बा'दे मुर्दन रूह़ो तन की इस त़रह़ तक़्सीम हो
रूह़ त़यबा में रहे लाशा मेरा बग़दाद में

ग़ौसे आ'ज़म ने मदद फ़रमाई

सय्यिदी **कुत़्बे मदीना** رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक मर्तबा

www.dawateislami.net

मुझ पर **फ़ालिज** का शदीद ह़म्ला हुवा और मेरा आधा जिस्म मफ़्लूज हो गया, अ़लालत (या'नी बीमारी) इस क़दर बढ़ी कि सब लोग येही समझे कि अब येह जां बर न हो (या'नी ज़िन्दा न बच) सकेंगे । एक रात मैं ने रो रो कर बारगाहे सरवरे काएनात صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में फ़रियाद की, **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे मेरे पीरो मुर्शिद, मेरे इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی علَیْہ ने ख़ादिम बना कर हु़ज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के आस्ताने पर भेजा है, अगर येह बीमारी किसी ख़त़ा की सज़ा है तो मुर्शिदी का वासित़ा मुझे मुआफ़ फ़रमा दीजिये । इसी त़रह़ हु़ज़ूर ग़ौसे पाक और ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی علَیْہِما की सरकारों में भी इस्तिग़ासा पेश किया (या'नी फ़रियाद की) । जब मुझे नींद आ गई तो क्या देखता हूं कि मेरे पीरो मुर्शिद सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی علَیْہ दो नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्गों के हमराह तशरीफ़ लाए हैं । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی علَیْہ ने एक बुज़ुर्ग की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया : ज़ियाउद्दीन (رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی علَیْہ) ! देखो ! येह हु़ज़ूर सय्यिदुना **ग़ौसुल आ'ज़म** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم हैं और दूसरे बुज़ुर्ग की त़रफ़ इशारा करते हुए इर्शाद फ़रमाया : और येह हु़ज़ूर **ख़्वाजा ग़रीब नवाज़** رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی علَیْہ हैं । हु़ज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने मेरे जिस्म के मफ़्लूज (या'नी फ़ालिज ज़दा) हि़स्से पर अपना दस्ते शिफ़ा फैरा और फ़रमाया : **उठो !** मैं ख़्वाब ही में खड़ा हो गया । अब येह तीनों बुज़ुर्ग नमाज़ पढ़ने लगे । फिर मेरी आंख खुल गई । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मैं तन्दुरुस्त

हो गया। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

मुर्शिदी मुझ को बना दे तू मरीज़े मुस्त़फ़ा
अज़ पए अह़मद रज़ा या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

इमदादे मुस्त़फ़ा

सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं मुझे मह़फ़िले मीलाद[1] करने के मुक़द्दस जुर्म में **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا से निकालने की **मु-तअ़द्दिद** बार कोशिश की गई लेकिन बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर फ़रियाद करता तो कोई न कोई सबब **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में ह़ाज़िर रहने का बन जाता। एक बार तो पोलीस ने मेरा सामान घर से उठा कर बाहर फेंक दिया! मैं परेशान हो कर गली में खड़ा था। सिपाहियों की नज़रें जूं ही ग़ाफ़िल हुईं, मैं तड़पता हुवा रौज़ए अन्वर पर ह़ाज़िर हो गया और रो रो कर फ़रियाद की। जब दिल का बोझ हलका हुवा, मैं वापस अपनी गली में पहुंचा तो पोलीस ने ख़ुद ही सामान अन्दर रख दिया था और मुझे बताया गया कि आप की शहर बदरी का ऑर्डर मन्सूख़ कर दिया गया है।

वल्लाह! वोह सुन लेंगे फ़रियाद को पहुंचेंगे
इतना भी तो हो कोई जो आह! करे दिल से (ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

या रसूलल्लाह! कहां फंस गया

वाक़ेई सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने मेहमानों

मदीना

1 : उन दिनों और ता दमे तह़रीर अ़रब शरीफ़ में गवर्नमेन्ट की त़रफ़ से "मह़फ़िले मीलाद" पर पाबन्दी है।

www.dawateislami.net

पर बेहद करम फ़रमाते हैं. सि. 1400 हि. (1980 ई.) में सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ जब पहली बार **मदीनए तृय्यिबा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا हाज़िर हुवा था और शायद मदीने की हाज़िरी की वोह पहली या दूसरी शब थी, रात काफ़ी गुज़र चुकी थी, **मस्जिदुन्न-बविय्यिशशरीफ़** علٰی صاحِبِہا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के बाहर बाबे जिब्रईल عَلَیۡہِ السَّلام की जानिब इस अन्दाज़ पर **गुम्बदे ख़ज़रा** के जल्वे लूट रहा था कि कभी वालिहाना अन्दाज़ में गुम्बदे ख़ज़रा की तरफ़ बढ़ता चला जाता तो कभी उसी सम्त रुख़ किये उलटे क़दम पीछे हटने लगता। थोड़ी ही देर गुज़री थी कि ड्यूटी पर **मु-तअय्यन** एक पोलीस वाले ने मुझे ललकारा और पकड़ लिया उस का साथी दीवार से टेक लगा कर ऊंघ रहा था। उस को इस ने ठोकर मार कर कहा : **قُم** (या'नी उठ) वोह एक दम "मशीन गन" तान कर मेरे सामने खड़ा हो गया ! एक पोलीस वाला मेरी ज़ुल्फ़ें खींचने लगा, एक या दो साल क़ब्ल **का'बतुल्लाहिल मुशर्रफ़ा** पर जिन दहशत गर्दों ने क़ब्ज़ा कर के वहां की बे हुर्मती की थी, जिस से दुन्या का हर मुसल्मान तड़प उठा था ग़ालिबन वोह सब लोग लम्बी लम्बी ज़ुल्फ़ों वाले थे तो हो सकता है पोलीस ने मुझे भी उन का आदमी समझा हो, उन्हों ने मुझ से पासपोर्ट तलब किया। इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त वोह मेरे पास मौजूद नहीं था बल्कि क़ियाम गाह पर था, अब तो मैं बिल्कुल ही फंस गया था, येह दोनों मिल कर मुझे एक कोठड़ी पर लाए उस का ताला खोला और अन्दर धकेलने लगे, रात काफ़ी गुज़र चुकी थी, मुझे पेशाब की हाजत हो रही

थी और मुझे एक दम फ़िक्र लाहिक़ हो गई कि इस कोठड़ी के अन्दर त़हारत व वुज़ू कर के नमाज़े फ़ज्र कैसे अदा कर पाऊंगा ! मैं घबरा गया और बे साख़्ता मेरी ज़बान से अपनी मा-दरी ज़बान मेमनी में फ़रियाद के कलिमात जारी हो गए जिस का उर्दू तरजमा है, **"या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कहां फंस गया !" अब तो और भी डरा कि मैं ने **"या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم" की सदा लगा दी है लिहाज़ा शायद मुझ पर शदीद ज़ुल्म होगा क्यूं कि बद क़िस्मती से वहां का "मुसल्लत़ त़बक़ा" **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कहने वालों को अच्छी नज़र से नहीं देखता मगर क्या ख़ूब करम हुवा कि जूं ही मेरे मुंह से **या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सदा निकली, मेरी बे कसी और घबराहट देख कर पोलीस वालों की हंसी निकल गई और उन्हों ने कोठड़ी के दरवाज़े पर ताला लगा दिया और मुझे छोड़ दिया।

जब तड़प कर या रसूलल्लाह ! कहा

फ़ौरन आक़ा की ह़िमायत मिल गई (वसाइले बख़्शिश, स. 115)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ाइबाना हस्तियों की आमद

हुज़ूर सय्यिदी **क़ुत़्बे मदीना** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर विसाल से दो माह क़ब्ल कुछ अ़जीब सी कैफ़िय्यत त़ारी थी। कुछ इर्शाद फ़रमाते तो समझ में न आता, बा'ज़ अवक़ात बार बार फ़रमाते : आइये क़िब्लए मन ! तशरीफ़ लाइये ! एक बार ह़ाज़िरीन ने देखा कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हाथ

जोड़ कर किसी से इल्तिजा कर रहे हैं : मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये, कमज़ोरी के बाइ़स मैं ता'ज़ीम के लिये उठ नहीं पा रहा। कुछ देर के बा'द ह़ाज़िरीन के इस्तिफ़्सार (या'नी पूछने) पर इर्शाद फ़रमाया : अभी अभी ह़ज़रते सय्यिदुना **ख़िज़्र** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, हु़ज़ूर सरकारे बग़दाद सय्यिदुना **ग़ौसे आ'ज़म** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और मेरे पीरो मुर्शिद आ'ला ह़ज़रत **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तशरीफ़ लाए थे।

विसाल शरीफ़ व जनाज़ए मुबा-रका

4 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम सि. 1401 हि. (2-10-81) बरोज़ जुमुआ़ **मस्जिदुन्नब-विय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के **मुअज़्ज़िन** ने "اَللّٰہُ اَکْبَر اَللّٰہُ اَکْبَر" कहा और सय्यिदी **कुत़्बे मदीना** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कलिमा शरीफ़ पढ़ा और आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیْہِ رٰجِعُوْن O बा'दे ग़ुस्ल शरीफ़ कफ़न बिछा कर सरे अक़्दस के नीचे **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हु़जरए मक़्सूरा शरीफ़ की ख़ाक मुबारक रखी गई, **आमिना** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दिलबर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर का ग़ुस्साला शरीफ़ और मुख़्तलिफ़ तबर्रुकात डाले गए। फिर कफ़न शरीफ़ बांधा गया। बा'द नमाज़े अ़स्र दुरूदो सलाम और क़सीदए बुर्दा शरीफ़ की गूंज में **जनाज़ए मुबा-रका** उठाया गया।

आ़शिक़ का जनाज़ा है ज़रा धूम से निकले
मह़बूब की गलियों से ज़रा घूम के निकले

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (हाकिम)

बिल आख़िर बे शुमार सोगवारों की मौजूदगी में सय्यिदी **कुत़्बे मदीना** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को उन की आरज़ू के मुत़ाबिक़ **जन्नतुल बक़ीअ़** के उस ह़िस्से में जहां अहले बैते अत़्हार عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आराम फ़रमा हैं, वहां सय्यि-दतुन्निसा फ़ाति़-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मज़ारे पुर अन्वार से सिर्फ़ दो गज़ के फ़ासिले पर सिपुर्दे ख़ाक किया गया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

“चल मदीना” के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से कुत़्बे मदीना के 7 मल्फ़ूज़ात

۞ जो शरीअ़त का पाबन्द नहीं वोह त़रीक़त के लाइक़ नहीं ۞ ख़्वाहिश परस्ती मोहलिक रफ़ीक़ है और बुरी आ़दत ज़बर दस्त दुश्मन है ۞ जो शख़्स अपने काम को पसन्द करता है उस की अ़क़्ल में फ़ुतूर आ जाता है ۞ दौलत की मस्ती से ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगो, इस से बहुत देर में होश आता है ۞ दुन्या बहुत बुरी चीज़ है जो इस में फंसा वोह फंसता ही चला जाता है और जो इस से दूर भागता है उस के क़दमों में होती है ۞ किसी नेक अ़मल की तौफ़ीक़ होना ही क़बूलिय्यत की निशानी है ۞ **मदीनए मुनव्वरह** زَادَہَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में अगर किसी का ख़त़ पढ़ा जाता है या उस का ज़िक्र किया जाता है या उस का नाम लिया जाता है तो येह उस की ख़ुश नसीबी है ।

www.dawateislami.net

आ़शिक़े मुस्त़फ़ा ज़ियाउद्दीन

आ़शिक़े मुस्त़फ़ा ज़ियाउद्दीन | ज़ाहिदो पारसा ज़ियाउद्दीन
दिलबरो दिलरुबा ज़ियाउद्दीन | मेरे दिल की ज़िया, ज़ियाउद्दीन
तुम को कुत़्बे मदीना या मुर्शिद ! | उ़–लमा ने कहा ज़ियाउद्दीन
येह शरफ़ कम नहीं शरफ़ कि मैं | हूं मुरीद आप का ज़ियाउद्दीन
मुझ को अपना बनाओ दीवाना | बहरे ग़ौसुल वरा ज़ियाउद्दीन
चश्मे रह़मत बसूए मन [1] मुर्शिद | बहरे अह़मद रज़ा ज़ियाउद्दीन
ऐसा कर दे करम रहें या रब ! | मुझ से राज़ी सदा ज़ियाउद्दीन
कैसे भटकूंगा कि हैं मेरे तो | रहबरो रहनुमा ज़ियाउद्दीन
एक मुद्दत से आंख प्यासी है | अपना जल्वा दिखा ज़ियाउद्दीन
मरज़े इ़स्यां से नीम जां हूं मैं | मुझ को दे दो शिफ़ा ज़ियाउद्दीन
चश्मे तर और क़ल्बे मुज़्त़र दो | बहरे ह़म्ज़ा शहा ज़ियाउद्दीन
मेरी सब मुश्किलें हों ह़ल मुर्शिद | मेरे मुश्किल कुशा ज़ियाउद्दीन
पौन सो साल तक मदीने में | तुम ने बांटी ज़िया, ज़ियाउद्दीन
जामे इ़श्क़े नबी पिला ऐसा | होश में आऊं ना ज़ियाउद्दीन
मेरे दुश्मन हैं ख़ून के प्यासे | मुझ को उन से बचा ज़ियाउद्दीन
आह ! तूफ़ां में है घिरी नय्या | ऐ मेरे नाख़ुदा ज़ियाउद्दीन
मौत आए मुझे मदीने में | कर दो ह़क़ से दुआ़ ज़ियाउद्दीन
मुझ को दे दो बक़ीए़ ग़रक़द में | अपने क़दमों में जा ज़ियाउद्दीन
ह़श्र में देख कर पुकारूंगा | मरह़बा मरह़बा ज़ियाउद्दीन
मुस्त़फ़ा का पड़ोस जन्नत में | मुझ को ह़क़ से दिला ज़ियाउद्दीन

बे अ़मल ही सही मगर अ़त़्त़ार
किस का है ? आप का ज़ियाउद्दीन

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (त-बरानी)

फ़ेहरिस

सफ़हा	उन्वान	सफ़हा	उन्वान
1	**100** ह़ाजतें पूरी होंगी	11	ग़ौसे आ'ज़म ने मदद फ़रमाई
6	इमामे अहले सुन्नत ने दस्तार बन्दी फ़रमाई	13	इमदादे मुस्तफ़ा
7	बाबुल मदीना ता बग़दाद	13	**या रसूलल्लाह !** कहां फंस गया
7	मदीनए पाक में ह़ाज़िरी	15	ग़ाइबाना हस्तियों की आमद
8	सात दिन का फ़ाक़ा	16	विसाल शरीफ़ व जनाज़ए मुबा-रका
9	मरह़बा, मरह़बा	17	कुत्बे मदीना के 7 मल्फ़ूज़ात
10	रोज़ाना मह़फ़िले मीलाद	18	आ़शिक़े मुस्तफ़ा ज़ियाउद्दीन
11	त़म्अ़ नहीं, मन्अ़ नहीं और जम्अ़ नहीं		

www.dawateislami.net

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, ए'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।